इकाई-III

9. एक दिन की बादशाहत

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. पाठशाला में यह दृश्य किस दिन दिखायी देता है?
3. उस दिन बच्चे क्या करते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

''आरिफ...सलीम...चलो फ़ौरन से जाओ,'' अम्मी की आवाज़ ऐन उस वक्त आती थी, जब वे दोस्तों के साथ बैठे कव्वाली गा रहे होते थे। या फिर सुबह बड़े मज़े में आइसक्रीम खाने के सपने देख रहे होते कि आपा झिंझोड़कर जगा देतीं ''जल्दी उठो, स्कूल का वक्त हो गया।''

दोनों की मुसीबत में जान थी। हर वक्त पाबंदी, हर वक्त तकरार। अपनी मर्ज़ी से चूँ भी न कर सकते थे। कभी आरिफ़ को गाने का मूड आता, तो भाई-जान डाँटते ''चुप होता है या नहीं? हर वक्त मेंढक की तरह टर्राए जाता है।''

बाहर जाओ, तो अम्मी पूछतीं ''बाहर क्यों गए?'' अंदर रहते, तो दादी चिल्लाती ''हाय, मेरा दिमाग फटा जा रहा है शोर के मारे! अरी रज़िया, ज़रा इन बच्चों को बाहर हाँक दें! जैसे बच्चे न हुए मुर्गी के चूज़े हो गए!''

दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने की तरकीबें सोचा करते। उन दोनों से तो सारे घर को दुश्मनी हो गई थी। लिहाज़ा दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई और अब्बा की ख़िदमत में एक दरखास्त पेश की कि एक दिन उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएँ और सब बड़े छोटे बन जाएँ!

''कोई ज़रूरत नहीं है ऊधम मचाने की!'' अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार डाँट पिलाई। लेकिन अब्बा जाने किस मूड में थे कि न सिर्फ़ मान गए बल्कि यह इकरार भी कर बैठे कि कल दोनों को हर किस्म के अधिकार मिल जाएँगे।

अभी सुबह होने में कई घंटे थे कि आरिफ़ ने अम्मी को झिंझोड़ डाला ''अम्मी, जल्दी उठिए, नाश्ता तैयार कीजिए!'' अम्मी ने चाहा एक झापड़ रसीद करके सो रहें, मगर याद आया कि आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।

फिर दादी ने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद दवाइयाँ खाना और बादाम का हरीरा पीना शुरू किया, तो आरिफ़ ने उन्हें रोका ''तौबा है, दादी! कितना हरीरा पिएँगी आप....पेट फट जाएगा!'' और दादी ने हाथ उठाया मारने के लिए।

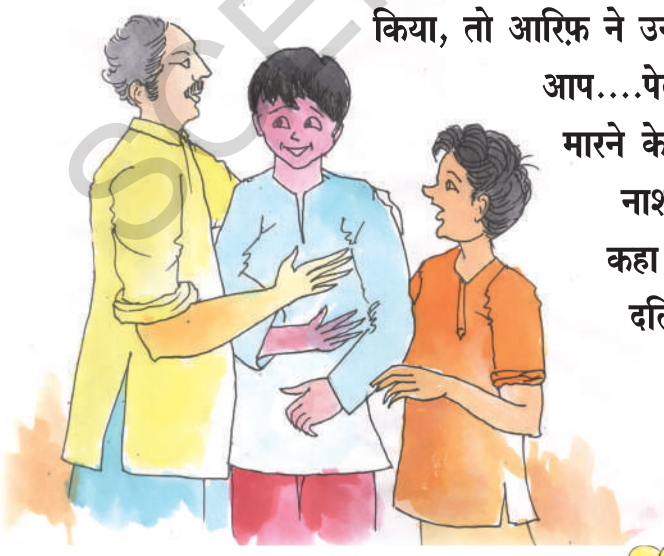

नाश्ता मेज़ पर आया, तो आरिफ़ ने खानसामा से कहा ''अंडे और मक्खन वगैरह हमारे सामने रखो, दलिया और दूध-बिस्कुट इन सबको दे दो!''

आपा ने कहर-भरी नज़रों से उन्हें घूरा, मगर बेबस थीं क्योंकि रोज़ की तरह आज वह तर माल अपने लिए नहीं रख सकती थीं। सब

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

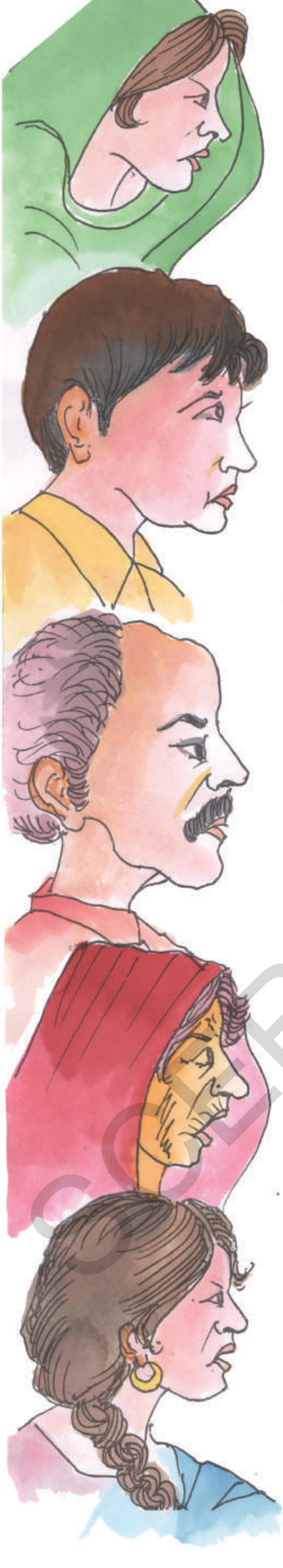

खाने बैठे, तो सलीम ने अम्मी को टोका, ''अम्मी, ज़रा अपने दाँत देखिए, पान खाने से कितने गंदे हो रहे हैं!''

''मैं तो दाँत माँज चुकी हूँ,'' अम्मी ने टालना चाहा!

''नहीं, चलिए, उठिए!'' अम्मी निवाला तोड़ चुकी थीं, मगर सलीम ने जबरदस्ती कंधा पकड़कर उन्हें उठा दिया।

अम्मी को गुसलखाने में जाते देखकर सब हँस पड़े, जैसे रोज़ सलीम को ज़बरदस्ती भगा के हँसते थे।

फिर वह अब्बा की तरफ़ मुड़ा ''ज़रा अब्बा की गत देखिए! बाल बढ़े हुए, शेव नहीं की, कल कपड़े पहने थे और आज इतने मैले कर डाले! आखिर अब्बा के लिए कितने कपड़े बनाए जाएँगे!''

यह सुनकर अब्बा का हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया। आज ये दोनों कैसी सही नकल उतार रहे थे सबकी! मगर फिर अपने कपड़े देखकर वह सचमुच शर्मिंदा हो गए।

थोड़ी देर बाद जब अब्बा अपने दोस्तों के बीच बैठे अपनी नई गज़ल लहक-लहक कर सुना रहे थे, तो आरिफ़ फिर चिल्लाने लगा ''बस कीजिए, अब्बा! फ़ौरन आफ़िस जाइए, दस बज गए!''

''चु....चु...चोप'' अब्बा डाँटते-डाँटते रुक गए। बेबसी से गज़ल की अधूरी पंक्ति दाँतों में दबाए पाँव पटकते आरिफ़ के साथ हो लिए।

''रज़िया, ज़रा मुझे पाँच रुपये तो देना,'' अब्बा दफ़्तर जाने को तैयार होकर बोले।

''पाँच रुपये का क्या होगा? कार में पेट्रोल तो है।'' आरिफ़ ने तुनककर अब्बा जान की नकल उतारी, जैसे अब्बा कहते हैं कि इकन्नी का क्या करोगे, जेब-खर्च तो ले चुके!

थोड़ी देर बाद खानसामा आया ''बेगम साहब,आज क्या पकेगा।''

''आलू, गोश्त, कबाब, मिर्चों का सालन....'' अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार कहना शुरू किया।

‘‘नहीं, आज ये चीज़ें नहीं पकेंगी!’’ सलीम ने किताब रखकर अम्मी की नकल उतारी, ‘‘आज गुलाब-जामुन, गाजर का हलवा और मीठे चावल पकाओ!’’

‘‘लेकिन मिठाइयों से रोटी कैसे खाई जाएगी?’’ अम्मी किसी तरह सब्र न कर सकीं।

‘‘जैसे हम रोज़ सिर्फ़ मिर्चों के सालन से खाते हैं! दोनों ने एक साथ कहा।

दूसरी तरफ़ दादी किसी से तू-तू मैं-मैं किए जा रही थीं।

‘‘ओफ्फो ! दादी तो शोर के मारे दिमाग पिघलाए दे रही हैं! आरिफ़ ने दादी की तरह दोनों हाथों में सिर थामकर कहा।

इतना सुनते ही दादी ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया कि आज ये लड़के मेरे पीछे पंजे झाड़ के पड़ गए हैं। मगर अब्बा के समझाने पर खून का घूँट पीकर रह गईं।

कॉलेज का वक्त हो गया, तो भाई जान अपनी सफ़ेद कमीज़ को आरिफ़-सलीम से बचाते दालान में आए ‘‘अम्मी, शाम को मैं देर से आऊँगा, दोस्तों के साथ फिल्म देखने जाना है।’’

‘‘खबरदार! आरिफ़ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया। कोई ज़रूरत नहीं फिल्म देखने की! इम्तिहान करीब हैं और हर वक्त सैर-सपाटों में गुम रहते हैं आप!’’

SCERT TELANGANA

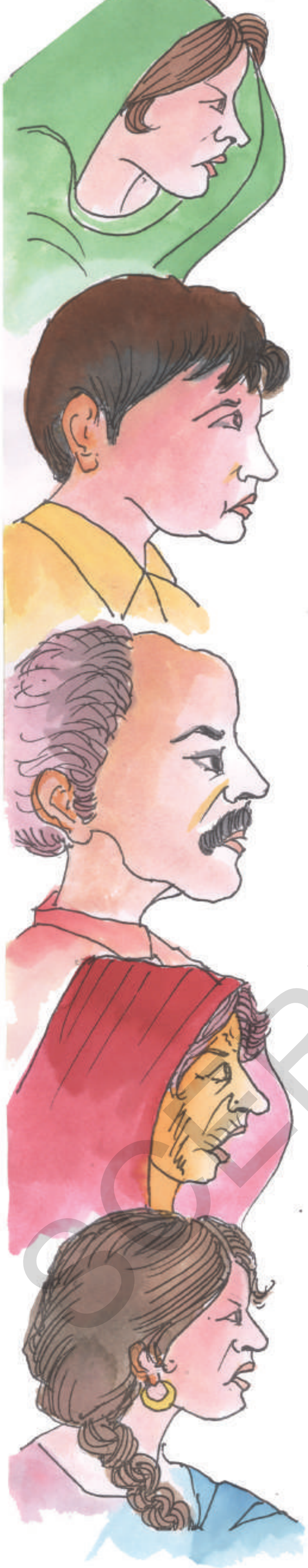

पहले तो भाई जान एक करारा हाथ मारने लपके, फिर कुछ सोचकर मुस्कुरा पड़े। ''लेकिन हुज़ूरे-आली, दोस्तों के साथ खाकसार फिल्म देखने की बात पक्की कर चुके हैं इसलिए इज़ाजत देने की मेहरबानी की जाए!'' उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा।

''बना करे....बस, मैंने एक बार कह दिया!'' उसने लापरवाही से कहा और सोफ़े पर दराज़ होकर अखबार देखने लगा।

उसी वक्त आपा भी अपने कमरे से निकली। एक निहायत भारी साड़ी में लचकती-लटकती बड़े ठाठ से कॉलेज जा रही थीं।

'आप..!' सलीम ने बड़े गौर से आपा का मुआयना किया। ''इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी? शाम तक गारत हो आएगी। इस साड़ी को बदल कर जाइए। आज वह सफ़ेद वॉयल की साड़ी पहनना!''

''अच्छा अच्छा....बहुत दे चुके हुक्म....'' आपा चिढ़ गई। ''हमारे कॉलेज में आज फ़ंक्शन है'', उन्होंने साड़ी की शिकनें दुरस्त कीं।

''हुआ करें...मैं क्या कह रहा हूँ...सुना नहीं..?अपनी इतनी अच्छी नकल देखकर आपा शर्मिंदा हो गई -बिल्कुल इसी तरह तो वह आरिफ़ और सलीम से उनकी मनपसंद कमीज़ उतरवा कर निहायत बेकार कपड़े पहनने का हुक्म लगाया करती हैं।

दूसरी सुबह हुई।

सलीम की आँख खुली, तो आपा नाश्ते की मेज़ सजाए उन दोनों के उठने का इंतजार कर रही थीं। अम्मी खानसामा को हुक्म दे रहीं थीं कि हर खाने के साथ एक मीठी चीज़ ज़रूर पकाया करो। अंदर आरिफ़ के गाने के साथ भाई जान मेज़ का तबला बजा रहे थे और अब्बा सलीम से कह रहे थे ''स्कूल जाते वक्त एक चवन्नी जेब में डाल लिया करो...क्या हर्ज़ है ...!''

जीलानी बानो

उर्दू से अनुवाद-लक्ष्मीचंद्र गुप्त

सुनिए-बोलिए

1. बादशाहत क्या होती है? आपके विचार से कहानी का नाम ''एक दिन की बादशाहत'' क्यों रखा गया है। आप भी अपने मन से सोचकर कहानी का कोई शीर्षक दीजिए।
2. अब्बा ने क्या सोचकर आरिफ़ की बात मान ली थी?
3. अगर आप को घर के सारे अधिकार एक दिन के लिए दे दिए जाएँ तो आप क्या करेंगे?

पढ़िए

1. पाठ के आधार पर वाक्यों को सही क्रम दीजिए (1,2....5)

   (अ) ''अच्छा अच्छा.....बहुत दे चुके हुक्म ..''आपा चिढ़ गई । ( )

   (आ) ''खबरदार'' आरिफ़ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया। ( )

   (इ) ''मैं तो दाँत माँज चुकी हूँ'' अम्मी ने टालना चाहा। ( )

   (ई) ''नहीं, आज ये चीज़ें नहीं पकेंगी।'' ( )

   (उ) ''बाहर आओ, तो अम्मी पूछती'' बाहर क्यों गए? ( )

2. ''.............आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।''

   (अ) अम्मी के अधिकार किसने छीन लिये थे?

   (आ) उन्होंने अम्मी के कौन-कौन से अधिकार छीने थे?

3. कहानी में आए हुए मुहावरों को पढ़िए, रेखांकित कीजिए और लिखिए।

4. पाठ पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   (अ) आरिफ़ और सलीम ने पाबंदियों से बच निकलने की क्या तरकीब निकाली?

   (आ) एक दिन के लिए घर के सारे अधिकार आरिफ़ और सलीम को मिल गये थे। उस दिन उन्होंने बड़ों के किन-किन कामों पर रोक लगाई?

   (इ) दूसरे दिन से बड़ों के बर्ताव में क्या बदलाव आया?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. बच्चों को बड़ों की कौन-सी बातें अच्छी नहीं लगती हैं? सोचकर लिखिए।
2. आपके विचार में बच्चों को घर में कौन-कौन से अधिकार देने चाहिए?
3. कहानी में ऐसे कई काम बताये गए हैं जो बड़े लोग आरिफ़ और सलीम से करने के लिए कहते थे। आपके विचार से उनमें से कौन-कौन से काम उन्हें बिना शिकायत किए कर लेने चाहिए थे और कौन-कौन से कामों के लिए मना कर देना चाहिए था।

शब्द भंडार

1. कौन-कौन-सी चीज़ें आपको बिल्कुल बेकार लगती हैं?

(क) पहनने की चीज़ें	....	....	....
(ख) खाने-पीने की चीज़ें	....	....	....
(ग) करने के काम	....	....	....
(घ) खेल	....	....	....

2. पाठ में बहुत सारे शब्द उर्दू के हैं। कुछ शब्द चुनकर उनके समानार्थी शब्द हिन्दी में और अपनी मातृभाषा में लिखिए।

उर्दू	हिन्दी /	मातृभाषा
वक्त	समय	....
अब्बा	....	....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

'यदि मैं बादशाह होता' इस विषय पर अपनी कल्पना से एक निबंध लिखिए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

आपको अपने पिताजी की जो बातें अच्छी लगती हैं, उन बातों के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(क) इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी?

यहाँ पर 'भारी साड़ी' से क्या मतलब है?

- साड़ी का वज़न ज़्यादा था।
- साड़ी पर बेल-बूटों की कढ़ाई थी।

(ख)- भारी साड़ी - भारी अटैची

ऊपर 'भारी' विशेषण का दो अलग-अलग संज्ञाओं के साथ इस्तेमाल किया गया है। इन दोनों में 'भारी' का अर्थ एक-सा नहीं है। इनमें क्या अंतर है?

(ग) 'भारी' की तरह हल्का का भी अलग-अलग अर्थों में इस्तेमाल कीजिए।

परियोजना कार्य

'बादाम' एक सूखा मेवा है। इससे कई चीज़ें बनाई जा सकती हैं। जैसे - हरीरा, हलुआ आदि। आप कुछ अन्य सूखे मेवों के चित्र इकट्ठे करके कॉपी में चिपकाइए। उनके नाम लिखिए साथ में यह भी लिखिए कि उनसे क्या-क्या बनाया जा सकता है?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	**हाँ (✓)**	**नहीं (×)**
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटी कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA